(हमारे असल तन जब परमधाम में बैठे हैं, तो हम कैसे आए, यह सोचो) क्योंकि यह ब्रह्माण्ड हमारी नजर के सामने टिक नहीं सकता।

और माया देखाई हम को, करी वास्ते हमारे ए।
होसी पूरन हमारी अर्स में, रूहें उमेद करी दिल जे।।६१।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे वास्ते ही यह संसार बनाया है और माया का खेल हमको दिखाया है। हम रूहों ने परमधाम में जिस खेल को देखने की चाहना की थी, वह चाहना भी परमधाम में बैठे-बैठे पूरी हो जाएगी।

हम रूहें न आइयां खेल में, हक अर्स सुख लिए इत।
हक हुकमें इलम या विध, सुख दिए कर हिकमत।।६२।।

हम रूहें खेल में आई नहीं हैं, फिर भी श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम के सुखों का आनन्द खेल में लिया। श्री राजजी महाराज के हुकम और इलम ने इस तरह से बड़ी हिकमत (कारीगरी) के साथ हमको सुख दिए हैं।

हम तो हुए इत हुकम तले, मैं न हमारी हममें।
ए मैं बोले हक का हुकम, यों बारीक अर्स माएने।।६३।।

इस संसार में मेरे अन्दर अहंभाव नहीं है, क्योंकि हम यहां हुकम के अनुसार काम करते हैं। यह मैं जो बोल रही हूं यह श्री राजजी महाराज का हुकम ही बोल रहा है। मैं तो परमधाम में बैठी हूं। यही तो परमधाम की बारीक गुझ बातें हैं।

हुकम किया चाहे बरनन, ले हक हुकम मुतलक।
करना जाहेर बीच झूठी जिमी, जित छूटी न कबूं किन सक।।६४।।

अब श्री राजजी महाराज का हुकम ही दृढ़ होकर परमधाम और राजजी को इस झूठी जमीन में वर्णन करना चाहता है, जहां किसी का कभी भी संशय दूर नहीं हुआ।

दिन एते हक जस गाइया, लदुन्नी का बेवरा कर।
हकें हुकम हाथ अपने लिया, जो दिया था महंमद के सिर पर।।६५।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे सुन्दरसाथजी! इतने दिन तक जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से मैंने श्री राजजी महाराज के हुकम से ही श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम को जाहिर किया। श्री राजजी महाराज ने अपना हुकम देकर मुझे काम सौंप रखा था। अब उस हुकम को श्री राजजी महाराज ने अपने हाथ ले लिया है।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ६५ ।।

हुकमें इस्क का द्वार खोल्या है

अब हुकमें द्वारा खोलिया, लिया अपने हाथ हुकम।
दिल मोमिन के आए के, अर्स कर बैठे खसम।।१।।

अब श्री राजजी महाराज ने हुकम अपने हाथ में लेकर परमधाम के दरवाजे खोल दिए हैं और मोमिनों के दिल में स्वयं अर्श बनाकर बैठ गए हैं।

Nijanand App

हक अर्स दिल मोमिन, और अर्स हक खिलवत।
वाहेदत बीच अर्स के, है अर्स में अपार न्यामत।। २ ।।

खेल में श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिनों का दिल है। परमधाम में मूल-मिलावा जहां पर हमारी परआतम बैठी है, वहां बेशुमार न्यामतें हैं।

ए साहेदी जाहेर सुनो, जो लिखी माहें फुरमान।
अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब पेहेचान।। ३ ।।

कुरान में जो हकीकत लिखी है उसकी एक बात और बताती हूं। मोमिनों के दिल को हक का अर्श कहा है, इसलिए परमधाम की पूरी हकीकत की जानकारी मोमिनों के दिल में है (क्योंकि श्री राजजी अन्दर बैठे हैं)।

हक हादी रूहें अर्स में, इस्क इलम बेसक।
जोस हुकम मेहेरबानगी, हकीकत मारफत मुतलक।। ४ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी, रूहें, इश्क, इलम, जोश, हुकम, मेहर, हकीकत और मारफत सब परमधाम में निश्चित रूप से हैं। वही सब मोमिनों के दिल में हैं, क्योंकि मोमिनों का दिल ही अर्श है।

दिल मोमिन अर्स कह्या, सब अर्स में न्यामत।
सो क्यों न करे दिल बरनन, जाकी हक सों निसबत।। ५ ।।

मोमिनों के दिल को अर्श कहा है और परमधाम की सब न्यामतें मोमिनों के दिल में हैं। यह श्री राजजी महाराज की अंगना भी हैं तो फिर यह श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार का वर्णन क्यों न करें?

सब बातें हैं अर्स में, और अर्स में वाहेदत।
हौज जोए बाग अर्स में, अर्स में हक खिलवत।। ६ ।।

यह सब बातें परमधाम की हैं, जहां रूहें मिलकर बैठी हैं। वहां एक दिली है। हौज कौसर ताल, जमुनाजी, बाग, बगीचे और मूल-मिलावा सभी परमधाम में हैं।

सो अर्स कह्या दिल मोमिन, सो काहे न करे बरनन।
जिन दिल में ए न्यामत, सो मुतलक अर्स रोसन।। ७ ।।

अब वह परमधाम मोमिनों के दिल में है और जिनके दिल में यह सब न्यामतें दृढ़ता से हों तो फिर वह परमधाम की और श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार का वर्णन क्यों न करें?

हम सिर हुकम आइया, अर्स हुआ दिल हम।
एही काम हक इलम का, तो सुख काहे न लेवें खसम।। ८ ।।

अब श्री राजजी महाराज हमारे दिल को अर्श करके बैठे हैं तो उनके हुकम का अधिकार हमें मिल गया है। श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार का वर्णन करना उनके इलम का काम है तो अब उनके स्वरूप और सिनगार का वर्णन करने के सुख क्यों न लें।

कह्या अर्स हमारे दिल को, हैं हमहीं हक हुकम।
क्यों न आवे इस्क हक का, यों बेसक हैयाती इलम।। ९ ।।

श्री राजजी महाराज ने हमारे दिल को अर्श कहा है, इसलिए हम ही श्री राजजी के हुकम के स्वरूप हैं। इस जागृत बुद्धि की तारतम वाणी से हमारे सब संशय मिटा दिए हैं तो फिर हमें इश्क क्यों नहीं आता।

Nijanand App

चरन बासा हमारे दिल में, रहे रूह के नैनों माहें।
क्यों न्यारे हम से रहें, हम बसें हक हैं जांहें।। १० ।।

श्री राजजी महाराज के चरण हमारे दिल में हैं और नैनों में हैं। वह हमसे कभी अलग नहीं हो सकते। अब श्री राजजी महाराज मोमिनों के दिल में हैं और हम भी वहीं हैं जहां श्री राजजी महाराज हैं।

मेरे सब अंगों हक हुकम, बिना हुकम जरा नाहें।
सोई हुकम हक में, हक बसें अर्स में तांहें।। ११ ।।

अब मेरे रोम-रोम में श्री राजजी महाराज और उनका हुकम विराजमान है। बिना उनके कुछ भी नहीं है। अब वह हुकम भी मेरे दिल में है, जहां श्री राजजी महाराज अर्श करके बैठे हैं।

हम अरस-परस हैं हक के, ए देखो मोमिनों हिसाब।
हम हकमें हक हममें, और हक बिना सब ख्वाब।। १२ ।।

हे मोमिनो! इस हिसाब को देखो कि हम और श्री राजजी महाराज अरस-परस एक हैं। श्री राजजी महाराज हमारे अन्दर हैं और हम श्री राजजी महाराज में एकाकार हैं। श्री राजजी महाराज के बिना सब मिटने वाला है (स्वप्न है)।

हक हुकमें सब मिलाइया, अर्स मसाला पूरन।
हादी रूहों जगावने, करावने हक बरनन।। १३ ।।

अब श्री राजजी महाराज के हुकम से श्री श्यामा महारानी को और रूहों को जगाने के लिए तथा अपने स्वरूप सिनगार का वर्णन कराने के लिए परमधाम की शक्ति मेरे तन में ला दी है।

आखिर मोमिन आकिल, कह्या जिनका दिल अर्स।
तो हक दिल का जो इस्क, सो मोमिन पीवें रस।। १४ ।।

आखिरत के समय के मोमिन बड़े बुद्धिमान होंगे। उनके दिल में श्री राजजी की बैठक होगी, तो श्री राजजी महाराज के दिल के इश्क की लज्जत मोमिन पिएंगे।

विचार करें दिल मोमिन, जो अर्स मता दिल हम।
तो हक दिल होसी कौन न्यामत, जो हक वाहेदत खसम।। १५ ।।

अब मोमिन इस पर विचार करें कि परमधाम की कुल न्यामतें उनके दिल में हैं, तो अब हमारे खसम श्री राजजी महाराज के दिल में और कौन सी न्यामत होगी, जो श्री राजजी महाराज की वाहेदत में है?

देखो मोमिनों के दिल में, कही केती अर्स बरकत।
विचार देखो हक दिल में, क्या होसी हक न्यामत।। १६ ।।

हे मोमिनो! देखो कि तुम्हारे दिल में परमधाम की कितनी न्यामतें हैं? अब फिर दिल से विचार करके देखो कि श्री राजजी के दिल में कितनी और कैसी न्यामतें होंगी?

हक हादी अर्स मोमिन, सो तो पेहेले हक दिल माहें।
जो चीज प्यारी रूह को, ताए हक पल छोड़ें नाहें।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज, श्री श्यामाजी, रूहें और परमधाम सब तो श्री राजजी के दिल में पहले से हैं। रूहों को जो चीज प्यारी लगती है उसे श्री राजजी महाराज एक पल के लिए नहीं छोड़ते। (वह श्री राजजी महाराज का इश्क है)।

Nijanand App

जो मता कह्या दिल मोमिन, सो मोमिन दिल समेत।
सो बसत हक के दिल में, सो हक दिल मता रूह लेत।। १८ ।।

मोमिनों के दिल का खजाना श्री राजजी और इश्क हैं। वह मोमिन इन दोनों चीजों अर्थात् अपने दिल सहित श्री राजजी महाराज के दिल में लेकर बैठे हैं। अब जो श्री राजजी के दिल में न्यामतें हैं। उन सबका आनन्द मोमिन लेते हैं।

जो रूह पैठे हक दिल में, सो मगन माहें न्यामत।
जो तित पड़ी कदी खोज में, तो छूटे ना लग कयामत।। १९ ।।

जो मोमिन श्री राजजी महाराज के दिल में इस तरह से बैठे हैं, वह श्री राजजी महाराज के दिल की न्यामतों में ही मग्न हैं। इतने पर भी यदि उस मोमिन को कोई संशय हो गया तो ब्रह्माण्ड के कायम होने तक खोज में ही उलझी रहेगी।

जो सुराही हक की पीवना, सा इस्क हक दिल मिने।
सो मोमिन पीवे कोई पैठके, और पिया न जाए किने।। २० ।।

यदि कोई मोमिन श्री राजजी महाराज के दिल के गंजान गंज भरे इश्क की सुराही से इश्क का रस पीना चाहता है, तो वह श्री राजजी महाराज के दिल में ही बैठकर पी सकता है। दूसरा कोई नहीं पी सकता।

कुलफ था एते दिन, द्वार इस्क न खोल्या किन।
सो खोल दिया हकें मेहेर कर, अपने हाथ मोमिन।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल का इश्क रस आज दिन तक छिपा था। किसी को भी जानकारी नहीं थी। अब श्री राजजी महाराज ने मेहर करके अपने मोमिनों को यह जानकारी दे दी है।

गंज खोलसी इस्क का, मोहोर हुती जिन पर।
लेसी अछूत प्याले मोमिन, हकें खोली मोहोर फजर।। २२ ।।

यह गंजान गंज इश्क से भरी सुराही (श्री राजजी का दिल) जो आज दिन तक बन्द पड़ी थी, श्री राजजी महाराज ने फजर के ज्ञान (कुलजम सरूप की वाणी) से उसे खोल दिया है। अब मोमिन उन प्यालों से जिनको आज दिन तक किसी ने छुआ ही नहीं, इश्क रस का पान करेंगे।

ए पिएं प्याले मोमिन, हक सुराही सराब।
लाड़ लज्जत लें अर्स की, ए मस्ती माहें आब।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज की इश्क भरी दिल की सुराही से इश्क की शराब (मस्ती) मोमिन पिएंगे तथा मस्ती में आकर श्री राजजी महाराज के लाड़-लज्जत और परमधाम के सुख लेंगे।

हक सुराही ले हाथ में, दें मोमिनों भर भर।
सुख मस्ती देवें अपनी, और बात न इन बिगर।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज ही अपनी इश्क भरी दिल की सुराही से इश्क के प्याले भर-भरकर अपने मोमिनों को देंगे। जिससे मोमिन इश्क की मस्ती में आकर अखण्ड सुख लेंगे। इसके बिना उन्हें और कुछ नहीं चाहिए।

Nijanand App

अमल ऐसा इन मद का, अर्स रूहें रही छकाए।
छाके ऐसे नींद सुपन में, जानों अर्स में दिए जगाए।। २५ ।।

श्री राजजी महाराज की इश्क की मस्ती का ऐसा अमल है (नशा है) कि जिसमें रूहें तृप्त हो गईं (छक गईं)। अब उन्हें संसार में बैठे ही ऐसा लगता है कि जैसे वह परमधाम में जागृत अवस्था में बैठी हों।

पेहेले एक ए हक के दिल में, रूहों लाड़ कराऊं निस दिन।
बेसुमार बातें हक दिल में, सब इस्क वास्ते मोमिन।। २६ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में पहले से यह बात रहती है कि अपनी रूहों को रात-दिन नए-नए लाड़ से सुख दूं। उनके दिल में ऐसे बेशुमार विचार हैं। वह सब मोमिनों के इश्क के वास्ते हैं।

ए खेल किया वास्ते इस्क, वास्ते इस्क पेहेचान।
जुदे किए इस्क वास्ते, देने इस्क सुख रेहेमान।। २७ ।।

श्री राजजी महाराज ने इसी इश्क की पहचान के वास्ते ही यह खेल बनाया और मोमिनों को अपने चरणों में बैठाकर अपने से अलग किया, ताकि उनको उनके धनी के इश्क की पहचान का सुख मिल जाए।

मोमिन उतरे इस्क वास्ते, वास्ते इस्क ल्याए ईमान।
ईमान न ल्याए सो भी इस्कें, इस्कें न हुई पेहेचान।। २८ ।।

इस इश्क के वास्ते ही मोमिन खेल में अर्श से उतरे हैं। इश्क के वास्ते ही जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से पहचान कर ईमान लाए हैं। जिनको ईमान नहीं आया, इश्क की पहचान नहीं हुई तो वह भी इश्क की हंसी के वास्ते हुआ।

कम ज्यादा सब इस्कें, इस्कें दोऊ दरम्यान।
इस्कें बंदगी या कुफर, सब वास्ते इस्क सुभान।। २९ ।।

किसी मोमिन को कम, किसी को ज्यादा, किसी को बीच के इश्क की पहचान हुई। श्री राजजी महाराज के इश्क के वास्ते ही किसी ने बन्दगी की और कोई बेईमान बना।

छोटी बड़ी या जो कछू, ए जो चौदे तबक की जहान।
ए भी हक इस्क तो पाइए, जो होए बेसक पेहेचान।। ३० ।।

चौदह तबकों की दुनियां में छोटा या बड़ा जो कुछ भी है इस बात की जानकारी तो मिलती है। यदि उनका इश्क प्राप्त हो जाए तो उनकी दृढ़ता से पहचान हो।

जो न्यामत हक के दिल में, तिन का क्योंए ना निकसे सुमार।
सो सब इस्क हक का, रूहों वास्ते इस्क अपार।। ३१ ।।

श्री राजजी महाराज के दिल में बेशुमार न्यामतें हैं। यह सब रूहों के इश्क के वास्ते ही हैं। रूहों के वास्ते यह बेशुमार हैं।

ए इलम आया जब रूह को, तब पेहेचान आई मुतलक।
जो हरफ निकसे दुनी का, सो सब देखे इस्क हक।। ३२ ।।

जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी जब रूह को मिली, तब पारब्रह्म और परमधाम की दृढ़ता से पहचान हुई। अब यदि उनके मुख से दुनियां का भी कोई हरफ निकलता है तो वह सब भी श्री राजजी महाराज के इश्क के वास्ते ही होता है।

Nijanand App

जब ए इलम रूहों पाइया, इस्क हो गया चौदे तबक।
और देखे न कछुए नजरों, सब देखे इस्क हक।। ३३ ।।

जब जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी रूहों को मिली तो उनको चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड भी इश्क का रूप दिखने लगा। उन्हें फिर कुछ दिखाई ही नहीं देता। सभी में श्री राजजी महाराज का इश्क ही देखती हैं।

रूह देखे अपने इस्क सों, होसी कैसा हक इस्क।
कैसा इलम तोकों भेजिया, जामें सक नहीं रंचक।। ३४ ।।

रूहें अपने इश्क से श्री राजजी महाराज के इश्क का मिलान करती हैं और हैरान होती हैं कि श्री राजजी महाराज ने यह कैसा बेशकी का ज्ञान उनके पास भेज दिया है।

त्रिलोकी त्रैगुन में, कहूं नाहीं बेसक इलम।
सो हकें भेज्या तुम ऊपर, ए देखो इस्क खसम।। ३५ ।।

चौदह लोकों और ब्रह्मा, विष्णु, महेश किसी के पास भी जागृत बुद्धि का ज्ञान नहीं था। अब श्री राजजी महाराज के इश्क को देखो कि उन्होंने वह ज्ञान तुम्हारे पास भेज दिया है।

किए चौदे तबक तुम वास्ते, इनमें मता है जे।
ए भी हक इस्क तो पाइए, जो देखो हक इलम ले।। ३६ ।।

चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड तुम्हारे वास्ते ही बनाया है। इसमें जो कुछ भी ज्ञान है उसकी पहचान भी जागृत बुद्धि से देखो तो तुम्हें पता लगेगा कि यह सब श्री राजजी महाराज के ही इश्क की लीला है।

फुरमान भेज्या हकें इस्कें, इस्कें लिखी इसारत।
तुमें कुन्जी दई हकें इस्कें, खोलनें हक मारफत।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज ने कुरान में इश्क के वास्ते ही इशारतें लिख कर भेजी हैं और उन इशारतों को खोलने के लिए तुम्हें जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया है। जिससे श्री राजजी महाराज के छिपे रहस्यों को अच्छी तरह खोल सको। यह भी इश्क-परीक्षा के वास्ते किया है।

फुरमान कोई न खोल सके, सो भी इस्क कारन।
खिताब दिया सिर एक के, सो भी वास्ते इस्क मोमन।। ३८ ।।

आज तक कुरान में छिपे रहस्य को कोई नहीं खोल सका। वह भी इश्क के वास्ते अब उनके खोलने का अधिकार एक श्री प्राणनाथजी को दिया है।

सब दुनियां हक इस्क हुआ, तो देखो अर्स में होसी कहा।
ए आया इलम रूहन पर, हकें भेज्या ए तोफा।। ३९ ।।

इस तरह से सारी दुनियां श्री राजजी महाराज के इश्क से इश्कमयी हो गई है। तो अब विचार कर देखो कि परमधाम में कितना इश्क होगा? जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी मोमिनों को अर्श का तोहफा भेजा है।

Nijanand App

विचार किए इत पाइए, हुआ एही अर्स सहूर।
वाको लिख्या कुरान में, ए जो कह्या नूर का नूर।। ४० ।।

श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी से विचार करके देखें तो कुरान में जो नूर का नूर, अर्थात् अक्षरातीत श्री राजजी महाराज के स्वरूप की पहचान लिखी है, वही जागृत बुद्धि की अखण्ड वाणी अब मोमिनों के दिल में है।

ए जाहेर कही हक वाहेदत, हक हादी उमत बातन।
सो करूं जाहेर बरकत हादियों, पर अव्वल नफा लेसी मोमिन।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज, श्यामा महारानी जी और रूहों की एकदिली की बातें जाहिर में कही हैं। अब मैं श्री राजजी महाराज और श्री श्यामाजी की कृपा से उन रहस्यों को खोलती हूं। इसका सबसे पहले लाभ (सुख) मोमिन लेंगे।

चरन ग्रहों नूर जमाल के, जिनने अर्स किया मेरा दिल।
सो बयान करत है हुकम, हक सुख लेसी मोमिन मिल।। ४२ ।।

मैंने श्री राजजी महाराज के चरणों को पकड़ती हूं जो मेरे दिल में बैठे हैं। अब श्री राजजी महाराज के हुकम से मैं बोल रही हूं, इसलिए श्री राजजी महाराज के सुखों को सब मोमिन मिलकर लेंगे।

अर्स हमेसा कायम, जो हक का हुआ तखत।
सो कायम दिल मोमिन का, जित है हक खिलवत।। ४३ ।।

परमधाम हमेशा अखण्ड है, जहां श्री राजजी महाराज तख्त पर मूल-मिलावे में विराजमान हैं। श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिन का दिल है, इसलिए अखण्ड है।

कदमों लागूं करूं सिजदा, पकड़ के दोऊ पाए।
हुकम करत हैं मासूक, बीच आसिक के दिल आए।। ४४ ।।

माशूक श्री राजजी महाराज आशिक मोमिनों के दिल में बैठकर हुकम करते हैं। मैं उनके दोनों चरण कमलों को पकड़कर सिजदा करती हूं।

मासूक तुमारी अंगना, तुम अंगना के मासूक।
ए हुकमें इलम दृढ़ किया, अजूं रूह क्यों न होत टूक टूक।। ४५ ।।

हे धनी! आपके हुकम ने और इस अखण्ड वाणी के ज्ञान ने यह दृढ़ कर दिया है कि आप मेरे माशूक हैं और मैं आपकी माशूक हूं (अर्थात् मैं आपकी आशिक हूं और आप मेरे आशिक हैं)। इतना जानकर भी मेरी रूह फना क्यों नहीं हो गई?

इतहीं सिजदा बंदगी, इतहीं जारत जगात।
इतहीं जिकर हक दोस्ती, इतहीं रोजा खोलात।। ४६ ।।

अब जिस दिल में श्री राजजी बैठे हैं, वहीं पर मोमिनों का सिजदा है, बन्दगी है। उसी के दर्शन ही यात्रा है और वहीं पर ही समर्पण है। वहीं पर बैठकर चर्चा सुनकर आत्मा को खुराक देनी है।

दिल को तुम अर्स किया, तुम आए बैठे दिल माहें।
हम अर्स समेत तुम दिल में, अजूं क्यों जोस आवत नाहें।। ४७ ।।

हे श्री राजजी महाराज! आप आकर मेरे दिल को अर्श बनाकर बैठे हो। मैं अपने दिल सहित आपके दिल में बैठी हूं। फिर भी हमें तड़प (जोश) क्यों नहीं आती है?

Nijanand App

दिल अर्स हुआ हुकमें, तुम आए अपने हुकम।
इस्क इलम सब हुकमें, कहूं जरा न बिना खसम।। ४८ ।।

आप अपने हुकम से ही मेरे दिल में आकर अर्श कर बैठे हो, इसलिए आपका इश्क और इलम सब आपके साथ मेरे दिल में है। इसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है।

बुध जाग्रत इलम हक का, और हकै का हुकम।
जोस अर्स का दिल में, ए सब मिल दिल में हम।। ४९ ।।

आपकी ही जागृत बुद्धि का ज्ञान और आपका ही हुकम और जोश मेरे अर्श दिल में है। इस तरह से मैं और आप मेरे दिल में मिलकर बैठे हैं।

अब दिल में ऐसा आवत, ए सब करत चतुराए।
फेर देखूं इन चतुराई को, तो हक बिन हरफ न काढ्यो जाए।। ५० ।।

अब मेरे दिल में ऐसा विचार आता है कि कहीं यह मेरी चतुराई तो नहीं है? दुबारा इस चतुराई के लिए सोचती हूं तो देखती हूं कि चतुराई कुछ नहीं, सब श्री राजजी के हुकम से हो रहा है।

हक चतुराई ना चौदे तबकों, हक बका कही न किन तरफ।
ला मकान सुन्य छोड़ के, किन सीधा कह्या न एक हरफ।। ५१ ।।

चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी ने भी अपनी चतुराई से श्री राजजी महाराज और अखण्ड परमधाम किस तरफ है इतना भी नहीं बताया। कोई भी निराकार और शून्य को छोड़कर बेहद तक का एक शब्द नहीं बोल सका।

हक चतुराई हक इलम, और हकै का हुकम।
ए तीनों मिल केहेत हैं, है बात बड़ी खसम।। ५२ ।।

श्री राजजी महाराज की चतुराई, इलम और हुकम तीनों मिलकर श्री राजजी महाराज की बड़ी महिमा बताते हैं।

ला मकान सुन्य के परे, हुआ नूर अछर।
कोट ब्रह्मांड उपजे खपे, एक पाउ पल की नजर।। ५३ ।।

निराकार और शून्य के आगे अक्षरधाम है। अक्षर ब्रह्म के हुकम से एक पल के चौथाई भाग में ऐसे करोड़ों ब्रह्माण्ड पैदा-फना होते हैं।

अछरातीत नूरजमाल, ए तरफ जानें अछर नूर।
एक या बिना त्रैलोक को, इन तरफ की न काहू सहूर।। ५४ ।।

केवल अक्षरब्रह्म ही अक्षरातीत नूरजमाल को जानते हैं। उनके सिवाय इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में किसी को भी जानकारी नहीं है।

तो कह्या आगूं हक बुध के, चौदे तबकों सुध नाहें।
सो बुध जाग्रत महंमद रूहअल्ला, दई मेरे हिरदे माहें।। ५५ ।।

इसलिए पहले से ही लिखा है कि श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि के आगे चौदह लोकों में किसी की सुध नहीं चलती। उस जागृत बुद्धि को श्यामा महारानी ने मुझे दिया।

Nijanand App

पातसाही एक खावंद की, बीच साहेबियां दोए।
ए वाहेदत की हकीकत, बिना मारफत न जाने कोए।।५६ ।।

परमधाम के मालिक एक श्री राजजी महाराज ही हैं। जिनकी दो धाम में दो साहेबी हैं। एक रंग महल में और दूसरी अक्षरधाम में। इस परमधाम की हकीकत की, मारफत के ज्ञान के बिना किसी को जानकारी नहीं हो सकती।

सो बुध दोऊ अर्सों की, दोऊ सरूप थें जो गुझ।
ए सुख कायम अर्स रूहन के, सो कायम कुंजी दई मुझ।।५७ ।।

अब श्री राजजी महाराज की जागृत बुद्धि तारतम वाणी ने रंग महल और अक्षरधाम की तथा श्री राजजी महाराज और अक्षरब्रह्म के स्वरूप की जानकारी दी। इन्हें आज दिन तक कोई नहीं जानता था। इस तरह से अर्श की रूहों के अखण्ड सुखों की जानकारी किसी को नहीं थी। उस अखण्ड की जानकारी जागृत बुद्धि के ज्ञान से मुझे दी है।

और सुख बारीक ए सुनो, कहे नूर नूरतजल्ला दोए।
नूरतजल्ला के अंदर की, सुध नहीं नूर को सोए।।५८ ।।

आनन्द की एक खास बात और सुनो अक्षर और अक्षरातीत जो दो स्वरूप बताए हैं उनमें अक्षरातीत के धाम के अन्दर रंग महल की लीला की सुध अक्षरब्रह्म को नहीं है।

जित चल न सके जबराईल, कहे आगूं जलत मेरे पर।
जलावत नूर तजल्ली, मैं चल सकों क्यों कर।।५९ ।।

यह अक्षरातीत का परमधाम वह ठिकाना है जहां जबराईल फरिश्ता भी नहीं जा सका। कहता था कि आगे जाने से अक्षरातीत के नूर का तेज मेरे पर जलाता है, इसलिए मैं आगे किसी तरह भी नहीं जा सकता।

सो सुध बातून नूरजमाल की, अर्स अजीम के अन्दर।
दोऊ हादियों मेहेर कर, पट खोल दिए अंतर।।६० ।।

उस परमधाम के अन्दर की लीला के रहस्य की श्री राजजी और श्री श्यामाजी ने कृपा करके मेरे अन्दर बैठकर जानकारी दे दी है।

जो सुध नहीं नूर जाग्रत, नूरजमाल का बातन।
सो बेसक सुध हकें मोहे दई, सो मैं पाई वजूद सुपन।।६१ ।।

श्री राजजी महाराज के अन्दर के रंग महल की लीला का ज्ञान जागृत अवस्था में अक्षरब्रह्म को नहीं है। वह जानकारी श्री राजजी महाराज ने मुझे सपने के तन में दे दी।

रूहें अंदर अर्स अजीम के, जो अरवा बारे हजार।
हक ऊपर बैठ देखावत, ए जो खेल कुफार।।६२ ।।

परमधाम के अन्दर बारह हजार रूहें हैं, जिनको श्री राजजी महाराज मूल-मिलावे में सिंहासन पर बैठकर इस माया का झूठा खेल दिखा रहे हैं।

सो भिस्त दई हम सबन को, कर जाहेर बका अर्स इत।
करें त्रैलोकी त्रिगुन कायम, ब्रह्मसृष्ट की बरकत।।६३ ।।

इस सपने के संसार में अखण्ड परमधाम को जाहिर करके हम सभी रूहों का अखण्ड स्थान परमधाम बताया और ब्रह्मसृष्टियों की कृपा से चौदह लोकों और त्रिगुण को अखण्ड मुक्ति दी।

Nijanand App

ए बात बारीक अति बुजरक, दोऊ सरूपों सुख बातन।
करी परीछा इस्क साहेबी, सुख होसी नूर रूहन।।६४।।

यह बात खास है और इसकी बड़ी भारी महिमा है कि दोनों स्वरूपों के सुख अलग-अलग तरह के हैं। इश्क और साहेबी दिखाने के वास्ते ही यह खेल बनाया जिससे अक्षर और रूहों को सुख प्राप्त होगा।

करसी कायम खाकीबुत को, करके नूर सनमुख।
इन से अछर और मोमिन, लेसी कायम अर्स के सुख।।६५।।

अक्षरब्रह्म के सामने जीवों को खड़ा करके बहिश्तों में अखण्ड करेंगे जिससे अक्षरब्रह्म और मोमिन अखण्ड घर के सुख लेंगे।

ए सुख जानें नूरजमाल, या जानें नूर अछर।
या हम रूहें जानहीं, कहे महामत हुकमें यों कर।।६६।।

श्री महामतिजी श्री राजजी के हुकम से कहते हैं कि इस सुख को अक्षरातीत श्री राजजी महाराज, अक्षरब्रह्म और हम रूहें ही जानती हैं।

।। प्रकरण ।। २ ।। चौपाई ।। १३१ ।।

आसिक इन चरन की, आसिक की रूह चरन।
एह जुदागी क्यों सहे, रूह बिना अपने तन।।१।।

हम रूहों के तन श्री राजजी महाराज के चरणों के आशिक हैं, श्री राजजी महाराज के चरण ही हमारी रूह हैं, इसलिए तन और रूह कभी भी जुदा नहीं हो सकते।

जो रूह अर्स की मोमिन, तिन सब की ए निसबत।
दिल मोमिन अर्स इन माएनों, इन दिल में हक सूरत।।२।।

जितनी भी परमधाम की रूहें हैं, सबकी यही निसबत (सम्बन्ध) है। इस तरह से श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिनों का दिल है, क्योंकि श्री राजजी महाराज स्वयं मोमिनों के दिल में विराजमान हैं।

हक सूरत रूह मोमिन, निसबत एह असल।
मोमिन रूहें कही अर्स की, तो अर्स कह्या मोमिन दिल।।३।।

श्री राजजी महाराज का स्वरूप और मोमिनों की रूह का सम्बन्ध (निसबत) मूल परमधाम से है, क्योंकि मोमिन परमधाम के हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को अर्श कहा है।

ए चरन दोऊ हक के, आए धरे मेरे दिल माहें।
तो अर्स कह्या दिल मोमिन, आई न्यामत हक हैं जांहें।।४।।

इस संसार में श्री राजजी महाराज के चरण कमल मेरे दिल में विराजमान हैं, इसलिए मोमिनों के दिल को इस संसार में अर्श कहा है। श्री राजजी महाराज स्वयं जिसके दिल में बैठे हैं, सभी न्यामतें स्वयं वहां आ गईं।

ए चरन हुए अर्स मासूक, हुआ अर्स चरन दिल एक।
ए वाहेदत जुदागी क्यों होए, जो ताले लिखी ए नेक।।५।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल हम माशूक रूहों का अर्श है, इसलिए जिस दिल में श्री राजजी महाराज आ गए, वह दिल दोनों का अर्श हो गया, क्योंकि हमारा अर्श श्री राजजी के चरण कमल हैं और श्री राजजी का अर्श मोमिनों का दिल है, इसलिए दोनों अर्श एक हो गए, इसलिए यह दोनों जुदा कैसे हों जो मूल से ही एक हैं।

Nijanand App